जय सन्तोषी माता: आरती (Jai Santoshi Mata Aarti)

जय सन्तोषी माता, मैया जय सन्तोषी माता ।

अपने सेवक जन की, सुख सम्पति दाता ॥

जय सन्तोषी माता, मैया जय सन्तोषी माता ॥

सुन्दर चीर सुनहरी, मां धारण कीन्हो ।

हीरा पन्ना दमके, तन श्रृंगार लीन्हो ॥

जय सन्तोषी माता, मैया जय सन्तोषी माता ॥

गेरू लाल छटा छबि, बदन कमल सोहे ।

मंद हंसत करुणामयी, त्रिभुवन जन मोहे ॥

जय सन्तोषी माता, मैया जय सन्तोषी माता ॥

स्वर्ण सिंहासन बैठी, चंवर दुरे प्यारे ।

धूप, दीप, मधु, मेवा, भोज धरे न्यारे ॥

जय सन्तोषी माता, मैया जय सन्तोषी माता ॥

गुड़ अरु चना परम प्रिय, तामें संतोष कियो ।

संतोषी कहलाई, भक्तन वैभव दियो ॥

जय सन्तोषी माता: आरती (Jai Santoshi Mata Aarti)

जय सन्तोषी माता, मैया जय सन्तोषी माता ॥

शुक्रवार प्रिय मानत, आज दिवस सोही ।

भक्त मंडली छाई, कथा सुनत मोही ॥

जय सन्तोषी माता, मैया जय सन्तोषी माता ॥

मंदिर जग मग ज्योति, मंगल ध्वनि छाई ।

विनय करें हम सेवक, चरनन सिर नाई ॥

जय सन्तोषी माता, मैया जय सन्तोषी माता ॥

भक्ति भावमय पूजा,अंगीकृत कीजै ।

जो मन बसे हमारे,इच्छित फल दीजै ॥

जय सन्तोषी माता,मैया जय सन्तोषी माता ॥

दुखी दारिद्री रोगी,संकट मुक्त किए ।

बहु धन धान्य भरे घर,सुख सौभाग्य दिए ॥

जय सन्तोषी माता,मैया जय सन्तोषी माता ॥

जय सन्तोषी माता: आरती (Jai Santoshi Mata Aarti)

ध्यान धरे जो तेरा,वांछित फल पायो ।

पूजा कथा श्रवण कर,घर आनन्द आयो ॥

जय सन्तोषी माता,मैया जय सन्तोषी माता ॥

चरण गहे की लज्जा,रखियो जगदम्बे ।

संकट तू ही निवारे,दयामयी अम्बे ॥

जय सन्तोषी माता,मैया जय सन्तोषी माता ॥

सन्तोषी माता की आरती,जो कोई जन गावे ।

रिद्धि सिद्धि सुख सम्पति,जी भर के पावे ॥

जय सन्तोषी माता,मैया जय सन्तोषी माता ।

अपने सेवक जन की,सुख सम्पति दाता ॥